कंद फसलों की रोपाई के बेहतर तरीके

भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित कंद फसलों की 67 उन्नत किस्में

कसावा (19): H-97, H-165, H-226, श्री प्रकाश, श्री जया, श्री विजया, श्री विशाखम, श्री पदमनाभा, श्री स्वर्णा, श्री पवित्रा, श्री अतुल्या, श्री अपूर्वा, श्री रेक्षा, श्री शक्ती, श्री सुवर्णा, श्री सह्या, श्री रेखा, श्री प्रभा, श्री हर्षा

शकरकंद (21): H-41, H-42, वर्षा, श्री कनका, श्री भद्रा, श्री अरुण, श्री वरूण, श्री रेतना, श्री नंदिनी, श्री वर्धिनी, गौरी, शंकर, कलिंगा, गौतम, किशन, सौरीन, भू सोना, भू कांती, भू जा, भू कृष्णा, भू स्वामी

रतालू (9): श्री कीर्ती, श्री रूपा, श्री शिल्पा, श्री कार्तिका, ओडिशा इलीट, श्री स्वाती, श्री नीलिमा, भू स्वर, श्री निधी

बंडा आलू (5): श्री शुभ्रा, श्री प्रिया, श्री हरिता, श्री धन्या, श्री श्वेता

कचालू (2): श्री लता, श्री कला

जिमीकंद (2): श्री पदमा, श्री अथिरा

अरबी (8): श्री रश्मी, श्री पल्लवी, मुक्ताकेशी, पानिसारु-1, पानिसारु-2, श्री किरण, भू कृपा, भू श्री

चिनी आलू (1): श्री धारा

तांत्रिक पत्रक: 01/2020 **कंद फसलों की रोपाई के बेहतर तरीके** दिसंबर 2020

जी. बैजू, संकेत जि. मोरे, डी. जगनाथन एवं ए.वि.वि. कौंडिन्या

प्रकाशक
वि. रवी
निदेशक (प्र.)

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, श्रीकरियम, तिरुवनंतपूरम 695 017, केरल
दूरभाष: (91)(471)2598551-2598554; फॅक्स(91)(471)2590063, ईमेल: director.ctcri@icar.gov.in; वेबसाईट: http://www.ctcri.org

कंद फसलों की रोपाई के बेहतर तरीके

फसल	बुआई का समय	रोपण सामग्री	बुवाई की विधि	बुआई का अंतर (सें.मी.)	जैविक खाद (ट./हे.)	नाइट्रोजन: फास्फोरस: पोटाश (कि.ग्रा./हे.)	पौध देखरेख	समय (महिने)	उत्पादन (ट./हे.)
कसावा	वर्षाकालीन: अप्रैल-मई बागायती: बारमासी	7-10 महीने पुराने तने के 15-20 सें.मी. लंबाई के टुकड़े	मेड नाली, समतल विधि, गद्दा क्यारी (५ सें.मी. उंची)	75 x 75, 90 x 90	12.5	100:50:100	बुआई के 30 व 40-45 दिनों के बाद निराई-गुड़ाई करें। सिचाई ६-७ दिन के अंतर से करना चाहिए।	6-10	25-30
शकरकंद	वर्षाकालीन: जून-जुलै बागायती: अक्टूबर-नवंबर, जनवरी-फरवरी	20-30 सें.मी. लंबे बेल के टुकड़े	मेड नाली, समतल विधि, गद्दा क्यारी, मिट्टी के नीचे 2-4 अंकुरों को ढक दे	60 x 20 (मेड नाली) , 80 x 75 (डौलीयां)	5	50:25:50	बुआई के 15-30 दिनों के बाद निराई-गुड़ाई करें। सिचाई ६-७ दिन के अंतर से करना चाहिए।	3-4	20-25
रतालू	मार्च-अप्रैल	250-300 ग्राम कंद के टुकड़े	गड्ढे खोदें और मिट्टी से ढक दें	90 x 90	10	80:60:80	बुआई के 15 दिन बाद बेल रस्सी पर चढ़ाएं। रोपण के 7 और 30 दिन बाद निराई-गुड़ाई करनी चाहिए और तने पर मिट्टी चढ़ाएं। आवश्यकतानुसार पानी दें।	8-10	25-30
बंडा आलू	मार्च-अप्रैल	250-300 ग्राम कंद के टुकड़े	गड्ढे खोदें और मिट्टी से ढक दें	90 x 90, 60 x 60	10	100:50:100		9-10	35-40
कचालू	मार्च-अप्रैल	100-150 ग्राम कंद के टुकड़े	गड्ढे खोदें और मिट्टी से ढक दें	75 x 75	10	80:60:80		8-9	15-20
जिमीकंद	फरवरी-अप्रैल	250-750 ग्राम कंद के टुकड़े	गड्ढे खोदें और मिट्टी से ढक दें	90 x 90	25	100:50:100	बुआई के बाद मिट्टी को ढक दे। रोपण के 45 से 75 दिन बाद निराई-गुड़ाई करनी चाहिए और तने पर मिट्टी चढ़ाएं। आवश्यकतानुसार पानी दें।	8-9	35-40
अरबी (तारो)	अप्रैल-जून	75-100 ग्राम कंद के टुकड़े	मेड नाली, समतल विधि, गद्दा क्यारी	60 x 45	12.5	80:25:100	बुआई के बाद मिट्टी को ढक दे। पानी 9-12 बार पानी दें । कटाई से 1 महीने पहले पानी देना बंद कर दें और पत्तियों को काट लें। रोपण के 30 से 60 दिन बाद निराई-गुड़ाई करनी चाहिए और तने पर मिट्टी चढ़ाएं।	6-7	15-20
अरबी	मार्च-अप्रैल	100-150 ग्राम कंद के टुकड़े	मेड नाली, समतल विधि, गद्दा क्यारी	90 x 90	12.5	80:25:100	बुआई के 30 से 60 दिन बाद निराई-गुड़ाई करनी चाहिए और तने पर मिट्टी चढ़ाएं। आवश्यकतानुसार पानी दें।	9-10	20-25
चिनी आलू	जुलाई-अक्टूबर	पूरे कंद, 10-15 सें.मी. लंबे बेल के टुकड़े	मेड नाली, समतल विधि, गद्दा क्यारी	45 x 30	10	60:60:100	बुआई के 30 से 60 दिन बाद निराई-गुड़ाई करनी चाहिए और तने पर मिट्टी चढ़ाएं। आवश्यकतानुसार पानी दें।	4-5	20-25
एरोरूट	मई-जून	2-4 कलियों के साथ 20-25 ग्राम वजन के टुकड़े	गद्दा क्यारी	30 x 15	10	50:25:75	बुआई के 30 से 60 दिन बाद निराई-गुड़ाई करनी चाहिए और तने पर मिट्टी चढ़ाएं। आवश्यकतानुसार पानी दें।	10-11	20-25